बौद्धदर्शन में प्रतीत्यसमुत्पाद की अवधारणा

क्षमा

'प्रतीत्यसमुत्पाद' शब्द प्रतीत्य और समुत्पाद दो शब्दों के योग से बना है, जिसमें प्रतीत्य का अर्थ 'ऐसा होने पर' या 'अपेक्षा रखकर' तथा समुत्पाद का अर्थ' वैसा होता है' अथवा 'वैसी उत्पत्ति' है। इस प्रकार व्युत्पत्ति के आधार पर प्रतीत्यसमुत्पाद का अर्थ 'इदंसत्यीदं भवति' अर्थात् 'ऐसा होने पर यह होगा' है।

प्रतीत्यसमुत्पाद के अनुसार पदार्थों की असत्ता को अविद्या संस्कार, विज्ञान, नामरूप, षडायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भव, जाति और जरामरण–इन बारह अंग के द्वारा जाना जा सकता है इसे द्वादश निदान भी कहते हैं इसमें पूर्व–पूर्व की सत्ता उत्तरोत्तर अंग के कारण प्रतीत होती है। साधक इनकी अनुलोम और प्रतिलोम प्रक्रिया करता है।